बदलाव संभव है

दयाराम साहू
प्रधानाध्यापक
शासकीय माध्यमिक शाला, शकरवार भोयना, धमतरी, छत्तीसगढ़

सहायक अध्यापक/ अध्यापिका	–	**हेमलता चंद्राकर, श्रीमती अनीता सोरी प्रमोद कुमार साहू**
भोजन माता	–	**देववती साहू, गायत्री बाई ध्रुव**
नामांकन	–	**35**

एक बेहतर स्कूल कैसा होना चाहिए? यह देखना हो तो आपको छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले के शकरवार गाँव के शासकीय माध्यमिक स्कूल में एक बार जरूर आना चाहिए। यहाँ आपको एक बेहतर स्कूल की पूरी न सही कुछ झलकियां तो मिल ही जायेंगी। यह इसलिए भी क्योंकि यहाँ पढाई–लिखाई के साथ–साथ दूसरी गतिविधियों को भी प्रमुखता

दी जा रही है और इन तमाम गतिविधियों में स्कूल यानी शिक्षकों, छात्र–छात्राओं और पालकों, ग्रामीणों व पंचायत सभी की साझेदारी है। जैसे कि सब को पता है, कहीं भी एक बेहतर स्कूल तभी संभव है जब स्कूल से जुड़े तमाम लोग और संस्था इसके लिए प्रयासरत होंगे और इस स्कूल में आने से इन सब प्रयासों के सबूत साफ नजर आते हैं।

छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले में स्थित यह शासकीय माध्यमिक शाला धमतरी से 10 किमी. की दूरी पर गंगरेल जलाशय के नीचे महानदी के किनारे बसे गाँव शकरवार में है। यहाँ ज्यादातर परिवार गरीब किसान और मजदूर हैं। जाहिर है लोग शहर में और पास के गोदामों में हमाली का काम और खेतों में खेतिहर मजदूरी करते हैं। स्कूल में कुल 35 बच्चे हैं जिनमें बालकों से ज्यादा बालिकायें हैं। लेकिन इस स्कूल की बात करें तो आपको यह जानकर आश्चर्य होगा की इस स्कूल में एक स्मार्ट क्लास है, पानी की व्यवस्था के लिए मोटर लगी है और स्कूल के मध्याह्न भोजन में स्कूल की बागवानी की सब्जियों का उपयोग होता है। "इस गाँव में आदिवासी और पिछड़े समुदाय के लोग रहते हैं। पर गाँव के सभी लोगों का और खास करके महिलाओं का स्कूल से काफी लगाव है। अभी जो आप स्कूल में बदलाव देख रहे हैं यह सब इन लोगों की सहयोग की वजह से है। यह कहना है स्कूल के प्रधान पाठक दयाराम साहू का। इस स्कूल में दो बदलाव काफी प्रमुखता से दिखाई देते हैं और दोनों ही महत्वपूर्ण हैं। एक है पठन–पाठन और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए स्मार्ट कक्षा की स्थापना और दूसरा बदलाव है शाला सौन्दर्यीकरण और बागवानी। प्रधान पाठक दयाराम जी इसके बारे में आगे जानकारी देते हुए कहते हैं– "शाला प्रबंधन समिति एवं पालक संघ की बैठक में सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव रखा गया कि स्कूल में शैक्षणिक वातावरण निर्माण एवं बच्चों के लिए बेहतर शिक्षा व्यवस्था हेतु कंप्यूटर एवं प्रोजेक्टर खरीदे जाएं सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि सामुदायिक सहभागिता के अंतर्गत शाला प्रबंधन समिति, पालक संघ, स्थानीय जनप्रतिनिधि एवं समस्त ग्रामवासियों के सहयोग से यह कार्य किया जाए। इसी बैठक में शामिल कई ग्रामीण जैसे बलराम यादव, पीके ध्रुव, राममिलन कुंजाम (सचिव, ग्राम पंचायत मुडपार), सुकनाथ ध्रुव, गोपाल

उइके, सुश्री मीना सुरेश यादव (सरपंच, ग्राम पंचायत, मुडपार), एमएल सिन्हा, सुश्री अनीता सोनी (शिक्षिका), सुश्री हेमलता चंद्राकर (शिक्षिका), सुश्री कान्ति नेताम (शिक्षिका), सुश्री सुरेखा ध्रुव, पीलाराम निषाद आदि कई लोगों ने आर्थिक योगदान दिया जिस से लगभग 60 हजार रुपये जमा हो गये। इस पैसे से इस गाँव के स्कूल के लिए एक कंप्यूटर, एक प्रोजेक्टर लिया गया और इस तरह से स्कूल की स्मार्ट क्लास तैयार हो गयी। आज बच्चे इस क्लास के जरिये पढ़ाई करते हैं और स्मार्ट क्लास में बैठने के लिए काफी उत्साहित रहते हैं। हमने ऐसे ही एक स्मार्ट क्लास देखी जो प्रधान पाठक के कक्ष में ही लगी है, जहाँ छात्र–छात्राएं प्रोजेक्टर के जरिये सुनते–पढ़ते हुए काफी खुश नजर आ रहे थे। इस बारे में चर्चा करते हुए छात्र–छात्राओं का कहना था कि शिक्षक जब अपने–अपने विषयों को प्रोजेक्टर के माध्यम से पढ़ाते हैं तो विषय वस्तु की अवधारणा की स्पष्ट रूप से समझने में मदद मिलती है।

इसी तरह यहाँ के सभी शिक्षक और शिक्षिका भी छात्र–छात्राओं को समझने और समझाने के लिए अपने–अपने स्तर से और सामूहिक रूप से भी प्रयास करते रहते हैं। इसके अलावा स्कूल के भौतिक विकास के लिए भी सभी का सामूहिक प्रयास लाजवाब है। सबसे पहले स्कूल की एक मासिक बैठक में शाला प्रबंधन समिति एवं पालक संघ द्वारा स्कूल में सौन्दर्यीकरण एवं बागवानी हेतु तथा क्यारी निर्माण हेतु प्रस्ताव रखा गया। प्रधान पाठक दयाराम साहू ने इस बारे में चर्चा करते हुए कहा कि– "इस प्रस्ताव पर सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि सामुदायिक सहभागिता द्वारा बागवानी की क्यारी निर्माण के लिए ईंट, सीमेंट, रेती और मिट्टी की व्यवस्था की जायेगी। मिट्टी इसलिए कि हमारा स्कूल एक पहाड़ी से लगा हुआ है इसलिए इसके नीचे जमीन पथरीली है। इन सब कार्य के लिए जमना चक्रधारी, सुकुल चक्रधारी, शिवकुमार चक्रधारी ने ईंट दिए, मैंने 6 बोरी सीमेंट दी। निर्माण कार्य में गाँव के राजमिस्त्री तोरण लाल साहू, ओमप्रकाश ध्रुव, अजित ध्रुव, नरेन्द्र ध्रुव, शोभाराम यादव, गंगा प्रसाद ध्रुव, अक्षय कुमार ध्रुव, पवन कुमार मानिकपुरी एवं सीतेश कुमार ध्रुव, ने अपना एक एक दिन का श्रमदान दिया।" उन्होंने आगे कहा– "उसी तरह बागवानी हेतु पेड़–पौधे खरीदने एवं क्यारी में मिटटी डालने हेतु बलराम यादव, सुकनाथ ध्रुव एवं झूमकलाल उइके ने रुपयों के साथ–साथ कई ट्रैक्टर मिटटी डलवायी। मिट्टी आने के बाद क्यारियों में मिटटी डालने का काम पालक संघ की माताओं ने किया जबकि पेड़ लगाने का काम शाला प्रबंधन समिति एवं पालक संघ ने किया।"

इस तरह से उस जगह पर 25x50 फीट का एक किचन गार्डन विकसित किया गया है। अब उस किचन गार्डन में मेथी, पालक, लालभाजी, बैंगन, लौकी, तरोई, करेला, मूली, भिन्डी से लेकर प्याज तक उगाया जा रहा है। जिसका उपयोग ना केवल स्कूल के मध्यान्ह भोजन में किया जा रहा है बल्कि जो उस से ज्यादा हो रहा है उसे बेचकर स्कूल के विकास के काम में उपयोग किया जा रहा है। यह निश्चित तौर पर स्वावलंबन एक बेहतरीन उदाहरण है। किचन गार्डन का काम बहुत मेहनत का भी काम है जो स्कूल के छात्र–छात्राएं, शिक्षक और पालक एवं ग्रामीण मिलकर कर लेते हैं। स्कूल के इन कार्यों के लिए यह स्कूल जिलास्तर पर कई बार पुरुस्कृत भी हो चुका है। जैसे माध्यमिक शाला शकरवारा की शाला प्रबंधन समिति को बंजर भूमि को उपजाऊ बनाकर किचन गार्डन के रूप में विकसित करने के लिए गणतंत्र दिवस 2018 में सम्मानित किया गया।

इसी तरह सामुदायिक सहभागिता के अंतर्गत शाला में कंप्यूटर और प्रोजेक्टर की व्यवस्था कर स्मार्ट कक्ष संचालन करने हेतु 2018 में जिलास्तर पर 'मुख्यमंत्री गौरव अलंकरण पुरस्कार' के अंतर्गत 'ज्ञानदीप पुरुस्कार' प्रदान किया गया। स्कूल के बच्चों के लिये किताबी ज्ञान के अलावा सामूहिक तौर पर और कई गतिविधियों का आयोजन होता है। जैसे शिक्षक, पालक–बालक/बालिका एवं माता उन्मुखी कार्यक्रम, बालमेला, बाल रचनात्मक ग्रीष्मकालीन शिविर और बाल कैबिनेट का गठन आदि। इस कार्यक्रम में आमंत्रित माताओं का अभिनन्दन किया जाता है एवं माताओं से शाला से जुड़ने के महत्व पर विस्तार पूर्वक चर्चा की जाती है। जिस से गाँव की महिलायें स्कूल से दिल से जुड़ जाती हैं और स्कूल को अपने जीवन का हिस्सा मानते हुए इसके विकास में जो भी मदद हो, जैसे आवश्यकता पड़ने पर श्रमदान से पीछे नहीं हटती हैं।

इन कार्यक्रमों से छात्र–छात्राओं को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अवसर मिलता है जो बहुत जरूरी है। इस ग्रामीण विद्यालय के छात्र–छात्राएं आज जिला और राष्ट्रीय स्तर पर भी अपना और अपने स्कूल का नाम रोशन कर रहे हैं। विद्यालय की छात्रा कुमारी प्रीति का मॉडल "मक्के की ठूंठ से हार्डबोर्ड या प्लाईबोर्ड बनाना" राष्ट्रीय स्पर्धा इंस्पायर अवार्ड नामक प्रदर्शनी आईआईटी नई दिल्ली में 14 व 15 फरवरी 2019 को प्रर्दशित हुआ। जिसमें प्रीति का मॉडल अन्तराष्ट्रीय स्पर्धा के लिए चयनित हुआ। यह निश्चित तौर पर विद्यालय के लिए बड़ी उपलब्धि है।

(दयाराम साहू की पुरुसोत्तम सिंह ठाकुर से हुई बातचीत पर आधारित)